नाम – डॉ. मोती लाल शाकार

महाविद्यालय का नाम – दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संकाय – कला

पदनाम – सहायक प्राध्यापक

विषय – भाषाविज्ञान

शीर्षक – 'द्विभाषिकता एवं बहुभाषिकता'

द्विभाषिकता एवं बहुभाषिकता

डॉ.मोतीलाल शाकार
सहायक प्राध्यापक
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

द्विभाषिकता

○ " भाषा " शब्द भाषा धातु से बना है जिसका अर्थ है कहना और बोलना अर्थात वह भाषाई माध्यम के द्वारा पूर्ण और स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रदान करता है। द्विभाषिकता का अर्थ है दो भाषाओं की प्रयोग की क्षमता। भाषाशास्त्रियों को अनेक रूपों में परिभाषित किया है ।

1. ब्लूमफील्ड के अनुसार *

द्विभाषकता से आशय है की किसी भाषा के मूलभाषी की तरह दो भाषाओं का प्रयोग ।

2. वाईनरिक के अनुसार *

द्विभाषिकता का अर्थ दो भाषाओं का (के एक बाद दूसरी का) का प्रयोग लेना है अर्थात दो भाषाओं के वैकल्पिक प्रयोग की स्थिति द्विभाषिता हैं ।

हेगेन ने द्विभाषिकता ke लिए दो भाषाओं के प्रयोग को अवयश्क नहीं माना है
उनके मतानुसार

I) दो भाषाओं का ज्ञान ही द्विभाषिता हैं

II) द्विभाषिता केवल भाषा के स्तर पर ना होकर बोली शैली शब्द और कई स्तर पर दिखाई देती हैं

यह आवश्यक नहीं है कि दो भाषाओं के जानकार दोनो भाषाओं में भी सक्षम हो। हो सकता है कि एक के प्रयोग में तो वह पूरी तरह सक्षम हो किंतु दूसरी का प्रयोग न कर सके। केवल उसे सुन या पढ़ के ही समझ सके ।

वस्तुत द्विभाषिकता की व्यहारिक परिभाषा इस प्रकार हों सकती हैं..

" द्विभाषिकता व्यक्ति की द्विभाषिक क्षमता है जो प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग प्रकार की होती है किसी व्यक्ति में दोनों भाषाओं में भाषा कौशल के चारों प्रकार सुनना,बोलना, पढ़ना,लिखना) की क्षमता होती है किंतु दूसरे मैं तीन दो तीन दो या केवल एक कौशल की क्षमता होती है। साथ ही यह क्षमता भी सभी कौशलों में बराबर नहीं होती है किसी में एक से अधिक होती है तो किसी में कम और किसी में बहुत अधिक किसी में बहुत कम होती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समझ में रहते हुए समाज के अन्य व्यक्तियों से बात करनी होती है तो सभी संभव हो सकती है जब हम अपने मन में स्थित विचारों एवं भावों को दूसरों तक पहुंच बात को समझने और प्रकट करने के लिए अनेक माध्यम है।

जैसे - विभिन्न चिन्ह संकेत, आंगिक चेष्टाएं बिना ध्वनियां आदि परंतु इन साधनों के अपनी एक मर्यादा है।

मनुष्य अपनी मनुष्य अपने वाक्य इंद्रियों से और संकेत ध्वनियां निर्माण कर सकता है। तथा किसी भी भाषा की ध्वनियों को सीख लेने के बाद उसे अनगिनत वाक्य बना सकता है। जिसके द्वारा वह आमने-सामने रहकर आपस में बातचीत करने के साथ-साथ अतीत को भी वर्तमान में जोड़ सकता है इससे स्पष्ट है कि संप्रेषण और विचारों के आदान-प्रदान की अद्भुत शक्ति भाषा में है।

भारत एक बहुभाषिक देश है यहां लगभग 1000 मात्र भाषाएं हैं जिनको ४०० वर्गीकृत भाषाओं में बांटा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने पारिवारिक स्थानीय क्षेत्रीय भाषा से परिचित होता है और बिना भाषा शिक्षण के आसानी से प्रयोग करता है।

(द्विभाषिकता के रूप)

द्विभाषिकता के दो रूप होते हैं

१) बाह्य द्विभाषिकता

बाह्य द्विभाषिकता में परस्पर भिन्न और स्वतंत्र भाषाएं होती हैं।

बाह्य द्विभाषिकता के भी दो रूप हैं।

1) दो सजातीय अथवा एकदेशीय भाषाएं --

देश के अंतर्गत चलने वाली एक प्रकार की भाषाएं

(द्विभाषिकता का वर्गीकरण)

द्विभाषिकता का वर्गीकरण मुख्यतः प्रयोक्ता ,परिस्थिति, समाज और क्षमता के आधार पर किया जाता है जो निम्न प्रकार से है -

1. देशगत द्विभाषिकता

देशगत विभाषिकता या बहुभाषिकता का संबंध व्यक्ति से न होकर देश या प्रदेश से होता है। इसमें व्यक्ति एक भाषिक होता है किंतु वह देश जिसमें वह रहता है वह द्विभाषी किया त्रिभाषिक आदि होता है।

२. समाजगत द्विभाषिकता

किसी समाज में दो भाषाओं का प्रयोग होता है औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप में।

३. उच्चवर्गी द्विभाषिकता

उच्च वर्गी द्विभाषिकता में सभी लोग द्विभाषी नहीं होते बल्कि उच्च वर्ग के सुशिक्षित लोग ही होते हैं।

४. सामान्य द्विभाषिकता

सामान्य द्विभाषिकता में दूसरी भाषा की शिक्षा नहीं दी जाती। लोक समाज में सुनकर ही दूसरी भाषा सीख लेते हैं।

५. प्रेरणाजनित द्विभाषिकता

कभी-कभी व्यक्ति अच्छी नौकरी पाने या समाज में उच्च स्तर तक पहुंचाने की प्रेरणा में दूसरी भाषा सीखना है इस प्रेरणाजनित द्विभाषिकता कहते हैं।

व्यक्तियों का अंग्रेजी सीखना

३. वक्त द्वारा प्रभाव डालने के लिए

वक्ता श्रोता की भाषा बौद्ध क्षमता को ध्यान में रखते हुए अपनी आंतरिक सुविधा विशेष प्रभाव उत्पन्न करने की इच्छा तथा दूसरे पर रोब डालने के लिए कई भाषाओं का प्रयोग करता है।

४. मातृभाषा का स्थान दूसरी भाषा का लेना

जहां पहली भाषा अर्थात मातृभाषा का स्थान दूसरी भाषा ले लेती है।

जैसे- कई वीडियो से विदेश में बसे प्रवासी भारतीय की मातृभाषा का स्थान वहां की भाषा ने ले लिया है ।

५. बौद्धिक विकास के लिए

जब व्यक्ति किसी भाषा विशेष को बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक समझता है तब भावनात्मक लगाव से उसे भाषा से जुड़कर प्रयोग करता है।

जैसे - भारत में अंग्रेजी के प्रति यह मत रहा है की अंग्रेजी विश्व भाषा है । इस भाषा के सहारे हम विश्व के मानव समाज के साथ बौद्धिक धरलता पर जुड़ सकते हैं। इससे भारत में अंग्रेजी शौर्य का प्रतीक हो गया है।

६. त्रिभाषा सूत्र

स्वतंत्रता के बाद भारत में भाषाई राज्यों का गठन हुआ फलत त्रिभाषा सूत्र जैसे मातृभाषा राष्ट्रीय भाषा तथा विदेशी भाषा को शिक्षा के क्षेत्र में लाया गया। जिससे भारत में शिक्षा व प्रभुतता का प्रतीक बन गया।

६. अभीन्नतार्थ द्विभाषिकता

कभी-कभी व्यक्ति किसी स्वदेशी भाषा समाज से अपने को भाषा एवं संस्कृति की दृष्टि से अभिन्न बनाने के लिए दूसरी भाषा अर्जित करता है।

७. वियोजक द्विभाषिकता

वियोजक द्विभाषिकता में दूसरी भाषा सीखने से पहले भाषा का महत्व कम होता जाता है।

८. असमकक्ष द्विभाषिकता

इसके अंतर्गत दूसरी भाषा में पकड़ कम होती है।

९. सक्रिय द्विभाषिकता

जब व्यक्ति दोनों भाषाओं को बोल और लिख सके तो सक्रिय द्विभाषिकता कहलाता है ।

१०. निष्क्रिय द्विभाषिकता

जब व्यक्ति केवल एक भाषा सुन और पढ़कर समझ सके तो निष्क्रिय द्विभाषिकता होती है

द्विभाषिकता प्रयोग के कारण

१. व्यवहार क्षेत्र

जब व्यक्ति घर में , बाजार में,कार्यालय में,कार्यरत रहता है तब क्षेत्र के अनुकूल भाषा का प्रयोग करता है।

२. तकनीकी ज्ञान के लिए

जब जब पहली भाषा और पर्याप्त होती है तब दूसरी भाषा सीखी जाती है विशेष का तकनीकी ज्ञान के लिए हिंदी भाषा